

DPN 6912

Title: योगचिन्तामणि YOGA CINTĀMAṆI

Run. No. 7637

Cat. No. ✓

Micro. No.

Subject Yoga.

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 19.5 x 32.5

Folios 24

Lines (in a page) 32 irregular

Compl. / Incompl. ✓

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyaśaphu / cardboard, folding

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

Begin. श्री गणेशाय नमः ॥ श्री दक्षिणामूर्त्यै नमः ॥ श्री गुरुवे नमः ॥

P. T. O.

विद्यो घतुतातश नीकाशं चित्पार्थ चिन्तामणि चारु मुजिमः ॥
ब्रह्माच्युते शाही समर्चितीध्रीं नमामि लम्बोदर सुगुविर्ध ॥ १॥

यस्ता लक्षराले युक्त भयाका लम्बोदरकन गर्ध कस्ता गरोश
भन्दा अनेक विष्णुरूपी तुल समुदायकन ताश गर्नाकन --- माहावीर श्री
गरोशकन नमस्कार गरी योग चिन्तामणि प्रकाश गर्ध ॥



श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीदेवी नमो यनमः ॥ श्रीगुरुवे नमः ॥ विद्वो धनुवान नमः ॥
वीकादी चिन्ता र्थि चिन्ता मणि चारु मणि मः ॥ प्रह्लाद भूते शादी समर्चिने श्री
नमामि तस्योदर सुगविर्य ॥ ११ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ योग कुरुते देव योगा-
भ्यामो विद्वोदस ॥ योगेन वा मयो की चिन्ता सर्व वद इति कर

ॐ नमो गुरु भो देवी भो योगी भो हर हर हर ॥
यस्मान्न क्षमते युक्त भयाका श्रीलभोदर कन तम कारुण्यं कुरुता गणेश
भक्त्या अनेक विद्या विनुत समुदाय कन नासग वा कन अग्नि जलै तेन प्रका
शमान भयाका भक्त ले चिता याका कार्य मा चीना मणि हे सुंदर मुनि भयाका
प्रह्लाद विष्णु महादेव ले पुता गरी येका चरण चरण कमल छन स्कावेला मा हा
विरथी गणेश कन तम कारुण्यं योग चिता मनि प्रकाश ग ११ ॥ श्रीपार वणि
ईश्वर सित ग हन हे श्री कर योग भक्ता को कलौ ईश्वर योग को भक्ता शक लो ई
इ योग ले काली द्वि ईश्वर योग को वीकार संपूर्ण कन कन वस ॥ १२ ॥ श्री ईश्वर
आज्ञा ग हन ॥ हे वाक् पाशा वायु अपान वायु ईश्वर को स योग स योग कन यो
ग भैरव कन ईश्वर को स योग कन योग भैरव सुने नादी समान कन योग भैरव जीवा रा
परमात्मा समान कन योग भैरव मनी ईश्वर ने आज्ञा ग च ॥ १३ ॥

ईश्वरोवाच ॥ यो ज्ञान प्राण यो योग स्वरोरेत मोल था ॥
सुख चंद्र म सो योगी वात्मा परमात्मने ॥ १३ ॥
वैदीन कन ले आत्मा रम को स योग परमात्मा विजे मन विन गनु त स्वन प
नी योग भैरव नाद ईश्वर को स योग पनी योग भैरव ॥ १४ ॥
स योग आत्म म सो योग ईश्वर चते बुधै ॥ नाद ईश्वर म
योगो योग ईश्वर की केचन ॥ १४ ॥ १४ ॥

वीथये वासना देवि समक्ष कन यो सर र मार हा को वडिया छठी वासना अ
सन कर्म कन छाडी ईश्वर विजे मन ले य गरी यस्मान्न क्षमते गरी योग युक्त
गनी जो छत्र पद विदेवि च्युति ईश्वर दैन ब्रह्म पद कन पाई छ ॥ १५ ॥ १५ ॥

यत्र स्थितो न च गते प्राप्ति प्रह्लाद यो मुनि ॥ आत्म प्रयत्न सा
वेशा विद्विषा वा मनो गती ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥

अपान वायु चंद्र स्वरुप वा ह्य सर र कन र शा ग हन प्राण वायु सुखे स्वरु
प अथवा अग्नि स्वरुप खाया पीया को वित्त को पाचन ग हन ॥ १६ ॥ १६ ॥

अपान श्वेद माडेह माया यति वा ह्यता ॥ प्राण सुखोदय
वा अपानि पंच तप री देव पु ॥ १६ ॥ १६ ॥ १६ ॥

कलै कामा प्राण वायु चंद्र वायु अपान वायु सुखे मय शरिर विजे ईश्वर वा
यु वाही र भिन्न आर्तु गानु ग हन ई वायु सर र मा भेद छ ॥ १७ ॥ १७ ॥

प्राण चंद्र म यो ज्ञान सुखे मय सथा ॥ ईश्वर शरिर ने
गणै वाता वात प्रकृत ॥ १७ ॥ १७ ॥ १७ ॥ १७ ॥

ईश्वर प्राण वासने यत्र पूर्व क स योग गरी कन योगा भ्या स गनु मोक्ष को ईश्वर
को ईश्वर गनी योगी कन ले योगा भ्या स गरी कन संपूर्ण योग सिद्धी पाई छ ॥
१८ ॥

अनयो र्धनो योग सदा भ्येस्यो मुमुक्षु भो ॥ मंत्र योग
तयश्चैव राजयोगो हठ सथा ॥ १८ ॥ १८ ॥ १८ ॥

योगेन विचार प्रकार का योग मंत्र हठ तय राज योग यती को न क्षण आर्त
नु क मे शित आज्ञा गनु क वस ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥

देव्युवाच ॥ कथय दे म हा देव योगा तत्त्व चतुर्विध म ॥
भुक्तिका सा मुशारेण यथा भूत क्रमात् मम ॥ १९ ॥

ईश्वर आज्ञा ग हन हे वाक् पाशा वायु वाहीर आर्त छ सकार ले भिन्न नां छ
न ईश्वर वरुने ईश्वर अथवा गायत्री सिद्ध ईश्वर यो मंत्र सदा सर्वदा जीवात्मा जप
छ ॥ १९ ॥ १९ ॥

ईश्वरोवाच ॥ हकारेण वहीर्यानि सकारेण विद्वो मरुत् ॥
हंस ईश्वर मूर्धन्य जीवो जपति सर्वदा ॥ १९ ॥

यकार ईश्वर हजार छ मय २९६०० केर दीन एवी यो मंत्र जीवात्मा जप छ नु सर्वदा
॥ १९ ॥ १९ ॥

षट् मयानि दीवा एवौ सरु शरणे कपी सीति ॥ एतत्संख्या चीर्त
मंत्रं जिबो जपति सर्वदा ॥ १९ ॥

कुराद लेनी सक्ती देवि ईश्वर भयाको ईश्वर पाणा यत्री प्राण वायु कन धार
ना गरी र हा कि यलि महा विदा अज पाकन नो जाला त कन योगी भैरव ॥ १९ ॥

कुराद लेनी स मुद्रता गाय विप्राण धारिणि ॥ ईश्वर वि
द्या महा विदा यलो अयेनि स वेद विनु ॥ १९ ॥

सप्त चक्र विजे वस्याका गरापति प्रह्लाद वीष्णु हृद जिवात्मा गुरु यति देवता वाई
प्रात काल विजे प्रतेक प्रतेक सक प गरी अज पा समर्पण गनु ॥ १९ ॥

सप्त चक्र स्थितो भोग न पति प्रह्लाद वीष्णु हृद आत्म परमात्मा
श्रीगुरु देवता भ्य सैकै ईश्वर को समर्पन कर्तव्य ॥ १९ ॥

गुरुकोवाक्यले मुखमगावीखे हंस यो मंत्रविपरिन् जपगरी सोहं सोहं यो
मंत्रसिद्धिईह यो मंत्रयोगमनीकहाकोह ॥१६॥

गुरुवाक्य मुखमगावीविपरितो भवेजप ॥ सोहं सोहं

मिति प्राप्ते मंत्रयोग मठ्यते ॥१६॥

प्रागकृत्य हान कर्मबान्यास वदंगवास अगमना कावास योतावास आ
दीनानावास मरी विखेस्थानमा जोईहन् पुजन गच्छन् मंत्रजप होमा
नाना कर्मकन मंत्रयोग कहिईह ॥१७॥

प्रागकृत्य हान पुजन न्वासादी मंत्र मंत्रजप होमा

दीरपो मंत्र योग ॥१७॥

हठ ईडुई अक्षरको अर्थ हकाट अक्षर मुजेनादी ठकार असर चडनादी मु
जेनादी चडनादि दुई को येक गर्नु जो छतस्कन हठयोग भनु ॥१८॥

हकारेहानु सूर्योसो ठकारेहो दुहचये ॥ चंद्रसूर्ये

मसोरेक्ये हठ ईह विधीयेने ॥१८॥

प्रागवायुफन नाकवाट मुखवाट कन पनी तनीका धु मवावाट अपानवायुको
सयोग गर्नु तस्कन हठयोग कहिईह ॥१९॥

प्रागवायु गरी हवा प्राणा वायु परायण ॥ प्राणा वायु

समायोग प्राणा वायु मोहोच्यते ॥१९॥

पुरक रेचक कुंभक आदिना आसन आदि मुदा वैधजान धर वैध ओडीयान वै
ध महा मुद्रा वैध महा वैध वैध सक्ति चालन इत्यादि सम्पूर्ण हठयोग को अंग कहि
छ ॥२०॥

मुलवैधजान धरोदीयान महा मुद्रा महा वैध

महा वैध सक्ति चालन ॥२०॥

हठ योगले अज्ञान कन नासगर्ह समस्त रोगफन नासगर्ह जीवात्मा परमात्मा
को येक गर्हन् ॥२१॥

हठेन अस्थिते जप सर्वदोष समुद्रव क्षयत्र परमात्मा च

तयोरेक्ये सदा भवेत् ॥२१॥

अथनये योग ॥ श्रीमाहादेवने सपादन शर्गुथ विषये नये योग कहि याको
छ अनाहतक देखि कल्पत्रभयाको नादसद समान नये योग समान नये यो
ग समान नये योग बरोबर योगमा केहि छैन प्राणायामने प्राणवायु मनको
नयईदामा अनाहत चक्र वाट नादसद कपनीईह ॥२२॥

सदाशिवोक्तानी सपादन शर्गुथ नयोवधाना नीचस

नीमुमो ॥ नादानी संधान समाधिनेक मन्त्रा महमा

पतमंत्रयोग ॥२२॥

नये योगको साधना भयावहो जीवात्मा वा मासा विषे चीन नीनईह प्राणवा
यु आदी वायु स्थिरईह नये योगको साधना भयावहो योगले संपूर्ण सिद्धिईह
यो जीवात्मा प्राणवायु अपानवायु ले मथितल ले जांछन् दाहीनु बाहुने जांछन्
यो जीवात्मा सदा सर्वदा चंचलईह स्थीकैले पनी हठेन येस्कारा ले प्राणवा
यु अपानवायु ईडुई को मंत्रयोग गर्नु मन प्राणवायुमा जांछ यस्मै समये माजी
वात्मा स्थिरईहन् ॥२३॥

तदेक्ये साधिते देवि चित्तयाती विनिनता ॥ पवनस्थे

यमायाती नययोगा दयसती ॥२३॥

अथ राजयोग ॥ राजयोग ले मरीर क्षारि पुरुष शोभा देख दिव्य मान भैकन
अविनासि परमात्मा पडकन ले जांछन् नलो नाई राजयोग भनु राजयोग ले जीव
न मुक्तईह ॥२४॥ २५॥ २६॥

नयातल प्राप्ते सिद्धि सार्नद परम पद ॥ अथ राजयोग ॥

वह्निमुद्रा नीत पूर्वोक्तियोश्च तमय ॥२४॥ अन्त मुद्रा नी

त स्वल्पो ह्येन योगि सदेवहि ॥२५॥ राजान दीप्यमानय पर

ब्रह्माणमक्यं ॥ देहिने प्राप्ते द्युस्तु राजयोग मठ्यते ॥२६॥

समस्त मुक्त योगादि योग अर्द्धा गत क्षनः

गुरुका कृपाले पाईईह शिवका प्रसाद ले योग सिद्धिईह के पावेती ससारको
संतापना सनीमि योग साधना गर्नु ॥२७॥

गुरुप्रसाद स्वभने योग मखोगत क्षरणी ॥ शोव प्रसादा

तभने योग सिद्धी च सधनीम् ॥२७॥

वेस निमित्तानि जने पवनाभास गर्नु पवनाभास गर्दा गर्दा अग्निको तेज अ
पंतदिन २ प्रतिबद्ध ॥२८॥

समर्न भवना वस्य योग भज सदा प्रीय ॥ सर्वधुधे सदा

भास कर्तव्यो मोक्षकाशिभि ॥२८॥

अग्नीको तेज वखा पाछि सुखेने अन्न पाचनईह अन्नको परी पाक भया पाछि
रस वृद्धिईह ॥२९॥

योगसूत्रानुसारं मुक्तानी नीत साधना नीत साधना

सनाभासयोगेन वायुरभ्यसीतो भवेत्
वायुरभ्यासतो वही प्रपठं वधते भूमी ॥ २५ ॥
रसवृद्धि मया पश्चिधातुको नीपवृद्धि ईष्ट धातु पुष्ट मया पश्चिधातु रदृष्टव
नीयो ईष्ट ॥ २० ॥

वक्रो विवधमाने च सुषुप्तं न ही वचने ॥
अनस्य परा पाकेन रसवृद्धि प्रजायेते ॥ २१ ॥
योगाभ्यासने सरिरमाभयाको मत मुक्त कफ वापिन शेष म आदी समज
दोष नास ईष्ट शरीर मा रक्षा को सपुर्ण वाप नास ईष्ट सात जन्म मा गन्धा को
पाप नाश ईष्ट ॥ २१ ॥

रसे वृद्धि गते निर्विकृते धातवः सदा ॥ धातो
सर्वधना देव दृष्ट कायो महावता ॥ २१ ॥
जो मनुष्य ने हठ योग विरज योग गर्हन राज योग विना हठ योग गर्हन को
परीश्रम येथार्थ ईष्ट येस्कारण शानि जनने हठ योग गरी कन राज योग ॥
न राज योग गरी कन हठ योग गर्न ॥ २२ ॥ २३ ॥

दोषा पूर्वो विभुष्यन्ती मज मुक्त कथायेका ॥
दहने सर्व पापानि सप्त जन्म कृता निवृ ॥ २२ ॥
हठ विना राज योग विना हठ ॥ यवै वर गिता
मन्त्रैः फल वर्जिताम् ॥ २३ ॥
योगी जन हठ ने ये सना ई प्राणा याम गर्नु अभ्यास को तक्षन कक्षा को
हृ ॥ २४ ॥

सुखे च दारव्य को प्राणा पान यो रे क्वल क्षणम् ॥
प्राणा यामो ह्यमो योगी योग सिद्धि निगद्यते ॥ २४ ॥
गुरु काष्ठ पाठे हठ योग अभ्यास गर्नु श्री मत्स्य द्वाध गोर सनाथ स्वा
मार मयोगी ॥ २५ ॥

हठ विद्या हि मच्छेद गोर सनाथ विज्ञायते ॥
स्वा मार मोठ वा योगी जानिने त्वयूसा दीर ॥ २५ ॥
श्री आदिनाथ मत्स्य द्वा सावरानन्द योगी भैरवानन्द चौरगीनाथ श्री मना
थ वीरु पासनाथ विनसेनाथ ॥ २६ ॥

श्री आदिनाथ मत्स्य द्वा सावरानन्द भैरवा ॥
चौरगीनाथ योरक्ष विरुपाक्ष विनपया ॥ २६ ॥

मठानयोगी भैरवयोगी सिधयोगी पुधयोगी करुणयोगी सुरानन्द
योगी सिधवाद्योगी चर्यशियोगी यनियोगी हठने योगाभ्यासगन्धा
॥ २७ ॥

मठान भैरवयोगी सिधपुधश्चकथति ॥ कोर रादी
कसुरानन्द सिद्ध पादश्च चर्यति ॥ २७ ॥
करुणयोगी पुधपादयोगी लयनाथ योगी निरंजन योगी कापाली योगी
चौलंघी योगी दीपीन योगी भाकियोगी नाद्योधयोगी चन्द्रकाविक्रयो
गी ईशपादिनामभयाका योगी हठने हठ योग ईशपादिका प्रभावने कान्त कने जि
नी प्रह्लाद विसे मुष पूर्व कफि ईष्टन ॥ २८ ॥ २९ ॥

अधमस प्रभुदेव यो ज्योत घांति तिना ॥
माह किना गनो धश्च चद्रकाविक्रम ॥
२० ॥ ईशपादयो माहासिद्धा हठ योग प्रभावता ॥
खण्डपिपाका नई ई प्रह्लाद देवि ईर तिना ॥ २९ ॥

अथ योग मण्डप तक्षनी ॥ योगाभ्यास गर्नु नाई स्थान न सनधार को मुख सु
श्ममानु गार्ड गार्ड माह्यात पतिर्वध गरी राज मुत सम ठ भिन्न कींचित गे होनुवा
ईश चारक नावरोवर चोकावना ईशु मंदप मना क ईश पतिन भया को हो नोप
नीन भया को प्रमारा को सर्वज गोवर ले निष्पा को वना सो भिन्न नान्वा भया
को मंदप वाहीर ५ मंदप १ ईशार वना ईशु पर्वा त वना ईशु हठ योग गन्धी सि
ध हठने योग मंदप तक्षण कक्षा ॥ ३० ॥

अथ योग मठ स्पत क्षणम् ॥ अथ द्वा र मर
ध्रुग पिठि कनापू च्छ निचायत म सम्यक गो
मय साक्षि प्रविमर्त नि शेष वान धागत म् ॥
पाल मंदत वेदिक य रुचिर प्राकार सर्वे स्थिति
प्रायो योग मठ स्पत क्षण मिदं सिद्धे हठ भा
सिद्धि ॥ ३० ॥

यज्ञात क्षणने युक्त भयाका योग मंदप विखे वसिकन संपुर्ण चित्त छोटी
गुरु लेवा या कामार्गने योगाभ्यास गर्नु ॥ ३१ ॥

एव विधे मठे स्थित्वा सर्व चिंता विवर्जिता ॥ गुरु
पदिष्ट मार्गेन योग मेव सदा भवेत् ॥ ३१ ॥

सुन्दर योग मण्डप विखे वसिकन योगाभ्यास गर्नु कजो योग मण्डप भयाव
हुने सुन्दर रम्य भया गार्ड गार्ड मा सुगंध राव्या को धुवने सुवासित भया को
गार्ड गार्ड मा सुगंध फलने युक्त भैलो भायमान भया को ॥ ३२ ॥

मंगडीरुईस्य विन्वास मनोऽगंधवासित॥
धुवासोदाभिसुरभिकमुमोकरमृदिदाम्॥४२॥
योगमण्डपकोभिनामा मुनिस्वरूपानि लेखिकाकानानातीर्थनानाव
र्वत कमलेनेयुक्तमयाकातनाई ईत्यादि लेखिकाको ॥४३॥
मुनितिर्थनदिबृक्ष पद्यमिनि शैलसोभित॥
वीथकर्मनिवर्द्धिर्विभेदविचित्रितम् ॥४३॥
योलेख्याकोकारन कितभन्वा लेखिराख्यकामुनिस्वरनाई देविकमभा
ज्ञानईह ॥४४॥ दृष्टाविवगतामसातान मुनियानिमनसमम् ॥सि
ज्ञानदृष्टानीयगतान् मतिरभूधमेभेत् ॥४४॥ अनेकठकमाआसन
सहितभयाका सिद्धपनिनेयनुजगाजगमाअर्धोरनरुपनिनेयनु
॥४५॥
मध्ययोगगृहेत्यर्थ निखेसंसारमण्डलम्॥
ईमसानश्चमहाघोरनरकीच निखेत्कचिन् ॥४५॥
येनिदेविकनयोगाभ्यासिकोमनयोगविषे मनवाह नानारोगेयु
क्तमयाकावनिनेयनु ॥४६॥
नादृष्टाभीवरणाकारसंसारभयवर्जिताम्॥
अनावभादोभवनियोगसिद्धेतिनामथा ॥४६॥
मयाकामुर्दपनिनेयनु वदुवाईरक्षाकावनिनेयनु यलाअनेकचिं
कारअनेकप्रकारकाहेरुक्तशुद्धचिंतगरीयोगाभ्यासगर्नु ॥४७॥
पश्यते व्यापितान् ननु मृतामृत्तक्षयम्॥
यवीविधश्चशुक्लामा स्थितोयोगोगृहेषुमे ॥४७॥
अथ आहारनिर्णय॥ प्रथमयोगाभ्यासगर्दविषेन बान्वावस्तुपिरेव
स्तु अमिलोयुर्मानि ईत्यादि चारजनसाहोसादिकरीयोवस्तुसोभान
नेवा रायोमाहा मडुकीकाप्रभितिकोमासुदहिमहि गहत् मासपिना
हिंस्तुनयलोवस्तुयोगाभ्यासगर्दविषेअपथ्यकहीयाकोह ॥४८॥
योगांगान्वाभ्यसेदिनीसंध ॥ककुमनिश्चा
नवरोधमरिश्चशाकसोविरुतेतितसर्वप
मत्स्यमंगलम्॥ आनादिमसिदधितककुत
पकोतपिरपाकहिं गुल्लुगादिम पथ्यमाहुं
॥४८॥

अधिकभोजन गगर्नु अतिनिद्रापनिनगर्नु अतिभाजन पतिनगर्नु क
से काममानिश्चा असनादिभोजन गगर्नु ॥४९॥
नयरासर्वपयास्तचमुर्ध्वदक्षं वतीक्षकं॥
अतीवभोजनपाग पतीनीद्रा निभासगम् ॥४९॥
येनेयोगाभ्यास वेलाविषेवस्तुचारिभैरहनुथोरैवान् योगाभ्यासविषे
मनसागर्दनुयेकाकमनेयोगाभ्यासगपापछिर्वर्षदिनभित्र योगसि
द्धईह येलासंदेहहैन प्रथमयोगाभ्यासगर्दविषे बान्वापथ्यवस्तु ग
ईसाजिकाजोको आरावकीयाअन्यवस्तु ययनिहमभोग गादुग्ध
गोघृतमुगीमासआलोतोनी बापाकोघी ईसणेत् मरुभुष्टी परव
तआदिपाचक फल बापाको निर्मज्जत येनीयोगाभ्यासिनाई
पथ्यह ॥५०॥
ब्रह्मणाचामिताहारियोगी योगवरयरा ॥
राव्यरुर्ध्वमेसीद्धिनावकार्यविरक्षाम् ॥५०॥
गुडथोरै गुमियोभयाकोनेन गाईको वाककोनोदुह धातुपुस्तु
न्यावस्तुममाईहभयाकोवस्तुप्रथमयोगाभ्यासमाहाउनु ॥५१॥
मिष्टसुमधुरैर्दिभ्यश्चैधानुप्रतोषराम् ॥मनो
मित्रचिन्तयोग्यनेव भोजनमाचरेत् ॥५१॥
सिद्धसिद्धकृत्कासातवार्तामुनु सिद्धमयाकाराहकोसत्तातानु
वेदांतज्ञानिजनलेक साकोश्वरागर्नु पुरादिपनिशुनयलोमुन्याप
छिमनयोगविषेनाह ॥५२॥
सिद्धांतश्वरांप्रागर्त व्यज्ञानश्वरापुर्ध्वे वेदांत
श्वराकुर्यात् योगतस्मिन् समभ्यसेत् ॥५२॥
वायुवस्तुभयाका वृद्धवस्तुभयाकारोगलेदुर्वतभयाको पनियोग
भ्यासगर्दसिद्धिकनपाईह ॥५३॥
प्रवावृद्धोनिवृद्धिवा वाधितोदुर्वलोपिवा ॥
अभ्यासात्तीक्ष्णीमाप्नोति सर्वयोग्यतीक्ष्णत ॥
॥५३॥
योगसाधनागर्दमा मनकोसाधनाकोक रकईह जाहासमईस्वरविषे
मनदिनसकेन जाहासमविषयवाज्ञा होउनुसकेन वाहासमविनथी
रईदेन यस्कारागे प्राणावायु साधनाभयावही मनकोसाधनाईह ॥५४॥
॥

प्रावधानेन मनो नानावधानासय ॥ तक्ष
 एता वासनावचंचित्तना नानावधाना ॥ ५४ ॥
 वायोकोमार्गचित्तकोमार्गके ईह यस्कारणते प्राणावायुजिह्वा
 कण्ठाननगर्भपृष्ठप्राणावायुजितननसकिकनचित्तकनजित्तनसकदेन
 किनर्भवावायुचंचलभयासम्भवीनचंचलईहचित्तचंचलभयोभनि
 येस्कारणते योगीदृष्टे चित्तस्थिरगर्भानीमीनवायुकनरोधगर्भप
 र्वतजले निश्चलभेवायुरोधनगर्भ ॥ ५५ ॥

यः प्राणाः पवनः स्पन्दः चित्तस्पन्दसप्तविधिः ॥ प्राणा
 स्पन्दजययत्तः कर्तव्यो धिमतोश्चक्रे ॥ ५५ ॥

नानाप्रकारकोप्राणायामगरीकनः नादिकसुद्रमयापद्धिः सुसुमणा नादि
 का सुखवासनगरी प्राणावायुभिजर्गह वायुकोमध्ये संचारमयापद्धिः मन
 स्थिरईह मनस्थिरमयापद्धिमनकोर्धमनिअवस्थाईह यलोर्धलोभयाप
 द्धिचित्तार्कन यलोर्धलोहोलाभनिगंजु योहोयोहोईनभनि मनविशेकोर्ध
 कल्पईदेन ॥ ५६ ॥

प्राणाजयविनाचिर्न जयस्याचित्तसाधनान् ॥
 चलेवगिचनेचित्तचिश्चर्च निश्चलेता ॥ ५६ ॥ यो
 जीस्थाराडत्वप्राप्नोति ततो वायुनिर्द्धयेत् ॥ ५६ ॥

माहो मध्ये संचारे मनस्थैर्य प्रजायते ॥ यो म
 नः स्थिरि भावः सैवावस्थामनोमति ॥ ५७ ॥

सास्वविचारगरीकनः सध्यामविद्याविचारगरीकनः साधुर्नकोविवागरीक
 न विषवासनाकोपरिपागगरीकनः प्राणावायुगरीकनः चित्तकनजीनाक
 नमनियन्तवैराग्यआदियोगभासलेवीनजीनाकनसकिह ॥ ५८ ॥

विविधैः प्राणायामयोगैः नाडिके विशोधिते ॥
 सुक्मानावदनीभिवा सुखादिशानिमाह ॥ ५८ ॥
 अध्यामविद्याधिगमः साधुर्नगमसेर्वव ॥
 वासनासपरिपागसमप्राणनिरोधनी ॥ ५९ ॥

प्राणवायुकेकनाकनवडगयोगसाधनान्नु जाहासमप्राणावायुशिरोध
 गर्भसकिह ईसैकातसम्भवीननिर्मलईह ॥ ६० ॥

एतास्माद्युक्तयश्चेष्टासतिचित्तमरुतनिरोधः
 गार्थायवडगयोगसुखसेत् ॥ वाक्केकमुह

६६ कलावचिर्न निरमयम् ॥ ६० ॥

संयुर्लईन्द्रोयहकानाथमनहो मनकानाथप्राणावायुकानाथमात्रयुह
 हजयजोहनादकोअभयगरीरईह चित्तस्थिरगर्भानीकोर्धवायकरोयोगर
 जगंधविशेविसारह ॥ ६१ ॥

ईन्द्रोयानीमनोनाथी मनोरथश्चमाह ॥ मा
 हतस्यनयोनाथः सनयोगादसाधित ॥ ६१ ॥

मनस्थिरमयापद्धिः वायुस्थिरईह वायुस्थिरमयापद्धिविदुस्थिरईह
 विदुस्थीमयापद्धिः शरिरस्थिरईह ॥ ६२ ॥

मनस्थीर्येस्थीरोवायुततोर्विदुस्थितोभवेत् ॥
 विदुस्थेयसथायनपीण्डस्थैर्यप्रजायते ॥ ६२ ॥

ब्रह्माकोरुपविन्दुः विष्णुर्मुपविन्दुः सदाशिवरुपविन्दुः वीन्दुर्वीशेसम्पूर्णदेव
 तासुष्मरुपवेष्याकाहन विन्दुवैलोक्यप्रकासगहनमोहिवीन्दुर्मुपसम्पु
 र्णतनुविशेरह्याकाहन ॥ ६३ ॥

विन्दुर्देवाविन्दुर्विष्णुर्विन्दुदेवसदाशिव ॥ विन्दुस
 र्वगतोदेवा विन्दुवैलोकादर्वणः अयेचरुपेवस
 तेसर्वजनुष ॥ ६३ ॥

विन्दुर्दुईप्रकारकोह शुक्लवर्णपरुक्लवर्णपरुक्लवर्णकनशुक्लमंजुपरुक्लवर्ण
 कनमाहारजभनुरविस्थानमावस्थाकाविन्दुसुर्वकानेजते सिंदुरवर्णईह
 ॥ ६४ ॥

सपुणः द्विविधोर्विन्दुः पादुजोरोहितस्था ॥ पादुई
 शुक्लमिवाहुं लोहतास्यमहारज ॥ ६४ ॥

चन्द्रस्थानमावस्थाकोर्विन्दुः चन्द्रकानेजते शुक्लवर्णकसेकामतविशेसुर्व
 स्थानहृदये शशिस्थानममध्येकहिह ॥ ६५ ॥

सिंदुरवर्णकाशीरविस्थानेस्थीतार ॥ श
 शिस्थानेस्थीतर्विन्दुः सजोरेकमुदुर्लभम् ॥ ६५ ॥

विन्दुमंवाकोशकी ईदुईशिवसकीकहिह विन्दुस्वरुपचंद्रमाः सखरुप
 सुर्व ईदुईकासंगमेते पत्रपदवाईह ॥ ६६ ॥

विन्दुः शिवोऽज्ञाको विन्दुरिंदुरनोरवि ॥
 ईमयोसंगमोदेवप्राप्यते परमपदम् ॥ ६६ ॥

विन्दु को साधनाले सम्पूर्ण पदकन पाई छ स्वर्ग मोक्ष धर्म पाई छ सरार विषे
विन्दु मुल भैकन रक्षा को छ ॥६७॥

त्वर्गमोक्षदोर्विदुः सर्वसारेणमुच्यते ॥

ارشد

नो अवस्था विषे वायु जां हन् ॥ ३ ॥ तौ अवस्था विषे बिन्दु जां हन् ॥ ४ ॥ ज जो ज को ग
ए वायु साधनागर्नसि की ह् ॥ तौ जौ तौ बिन्दु साधनागर्नसि की ह् ॥ ५ ॥

यामवस्थां प्रज्ज्वायुर्विन्दुस्तामेव गच्छति ॥ येथा

हि साधने वायुः कथा विदुः प्रसाधनम् ॥ ६० ॥

वायुर्चंचनमयाविंशयेविंदुर्चंचनद्विंशविंदुर्चंचनमयापञ्चविंशचंचनद्विंश-
ननादसोर्विंदुर्चोर्विंदुसोचिन्ननादविंदुचीनयोरीनकोलकसाधना
कठिनतसोमयापञ्चिमीपुर्णवायुकोधरागसिद्धद्विंश ॥ ६८ ॥

चरन्नेष यदावायुः सदा विन्दुश्च न स्मरति ॥ ११ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६५ ॥

जसने ये चरि मई दानं विकते गानुका द्विधुन सकळ ऊस पुरुष को विंदु
 धी आनिंग नाग्या पान विंदु पात नई देन जसो सरिर माविंदु स्थिर रह
 छता हा सन्म मृत्यु को भयई देन जाहा सन्म तैविका साधना गती सकळ
 ताहा सन्म सरिर माविंदु पात नई देन ॥७०॥७१॥

सर्वेनादसर्वेर्विदुस्तच्चित्तं वप्रकिञ्चितम् ॥ ना

दोर्विदुश्च विनयवाराणामेकसाधनं ॥७॥

कठिनसाधितेवायो. सर्वसिद्धिनिश्चयनम् ॥

स्वेचर्योमुद्रातयेन विज विमोदित ॥७९॥

कायसाधनागरिशक्तिवाचनागयापक्षिशक्तिदेविरजईछसो
रजविंदुकोमेकमयापक्षिसोपुरुषकादिष्यसरीरईछ॥२॥

नमस्यशरतेर्विन्दुः कामिन्द्यानिगीतस्यचः॥

यावर्षिन्दुस्थीतोदेहेतावन्मृत्युभयेकत् ॥२२॥

सरिनेमपुर्णकनजीतनसकछ. योगीहकुतेकामकोवलोभमोह
मदमासासुर्यमनईपादिसंहितसरिरकनजीतनाकनसकछ. स
प्रधातुभयाकोछाना १२ रक्त २ मासु ३ कोमो ४ हा ५ मासि ६ विर्य ७ यति
८ नेष्वाप्रभयाकोशरिरकरायोगकृपिअग्निदेहकनगरिकनशरिर

कनजिष्ट ११७३११७४११

यावद्वक्तानमोमुद्रानावक्षीन्दुतगच्छति-वायुनाह

क्रियातेन प्रेरितं च यदा रज ॥ ७३ ॥ याति विंदो सहे

तृप्रवेदीयवपुस्तथा॥ शारिरेण जिनासर्वेशारिरं

योनीभोजित ॥७४॥

भासनअभासनेरोगनासुद्ध प्राणायामसाधनातेपारक्रमनासुद्ध
प्रत्याहारगर्भातेमनकोविकारनासुद्ध योगीजनहृका ॥७५॥ ७६॥

ईदीयादिमनूवुद्धिकामक्रोधादिकंजितम्॥

सप्तधातुसंयोगोऽध्यायोगाग्निनाशनै ॥७५॥

आसनेन कृजोर्हीति प्राणायामेन वातकृत् ॥ वि

कारमानसंयोगि प्रत्याहारैरामुच्यते ॥१६॥

गोरक्षकामद्विषासन १ प्राणायाम १ प्रोहार १ मृगहारण १ ध्यान
१ समाधि येति दशोक्तं योगकाण्डे कथाकोट्यन ॥७७॥ ७८॥

आसने प्राणसंरोधः प्रत्याहारश्च धारणः ॥ ध्यानं

समाधिरेतानि योगानि वदति बहू ॥११॥ आ

सुनाति च तारिणि यावतो जिवन्मृतव ॥ प्रेतेषां म

विद्यारम्भे दानविज्ञानातिमहेस्वरम् ॥१०॥

न निजिवाजैतुक्कन्तेति आसनद्वयचतुरस्रिणिक्षरांयोगोऽ८०००००
येति आसनद्वय ॥७५॥

चतुरसितीनक्षत्रैरेकैः समुदाहृतम् ॥१५॥

साद्येश्वरमनिभीर्मस्य द्वाद्येश्वरयोगीमि ॥७५॥

येतीमध्ये एक एक जात का आसन शिवने आजाग या कोष्ट मध्ये ४ आ
सन प्रसिद्ध हैं शिव आदि शृंगिष्टने मत्स्य द्वाथ आदि योगीष्टने अथा
सगरी अंगीकार गरी या को केही केहि आसन कर्हिहत् ॥ १० ॥ समस्त आस
न करन न मस्कार गरेर गोरु श्वाथार्द्ध रत्न पूर्ण आसन को भेद येक महेत्तर
मान्य ग्राह्यहत् समस्त आसन माथे ४ आसन २ सिद्धासन व ज्ञानर ॥ १० ॥

अंगीकृतान्नासनादीः कथनेनानिधिभयाः॥

आसनेभ्यासमस्तेभ्यो द्यमेतद्दुहाहर्तः ॥५॥

कसिकालनं प्रोक्तं क्रियया कर्मणाशनम् ॥ ८० ॥

0911 x 11 x 11 x 11 x 11 x 11 x

अथसिद्धासततश्चनृ॥ मन्त्रकारविवेकाऽगोऽकोकुरुकुरुनिदृढगरिम
नकारधनुःवाहिनागोऽकाकुरुकुरुवातेनिकुम्भुनाईअवेत्तआप्राप्तए
रकनलोजोएषिनीश्वरभैईदीयकनजिनिअक्वध्यानदुष्टिलेभूमध्ये
माहेरीवधुःपरीतक्षणेनेयुक्तमयाकोमयाकोमोक्षसाधनावाईसि

श्रीसप्तकलाकोटः ॥८२॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

सिद्धासनतक्षरा ॥ जोनीस्थानमधिपुत्रघटिनं
कृत्वादुर्विचयेमेदेवात्मकेमेवनिघर्तक
वासमविग्रह ॥ स्थानसंप्रतिनेदीयोवजरीशार्
भूवोरैरचेतन्मोक्षकपाठमेदजनकंशिक्षासर्
प्रोच्यते ॥८२॥ * ॥८२॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

अथपञ्चासनतक्षरा ॥ वार्द्धक्यमादाहिनागोत्रकोपेतावाक्यनपारी
एषनुदाहिनागोत्रमावामगोत्रकोपेतावाक्यनगरिण्यनु ॥ दुईपेतावाक्य
वेदात्रकोटकेलागोरिक्तानगरिण्यनु ॥ शरिर्लभुगारिण्यनु ॥ मुखकावी
कंदोवातिमाकोईरखनु ॥ कसेकामतविखेकंददेनु ॥ तेवलेनासिकाकोअग्र
भागकेरिण्यनु ॥ यलासक्षरातेयुक्तभयाकोपाधिनासगर्भयोगिहृका
पञ्चासनकलाकोटः ॥ वद्वपञ्चासनतक्षरा ॥ पञ्चासनविखेदाहिनुज्ञानपक्षि
निरुगिकरणदक्षिणगुह्यासमाकृतु ॥ वामहातपक्षिनीरुगीकनवाम
पार्श्वकाकौगुह्यासमाकृतु ॥ यतिवद्वपञ्चासनतक्षरा ॥८३॥ * ॥ * ॥ * ॥

पञ्चासनतक्षरावामोहपादिदक्षिणचरणास
स्थाप्यवामोहदक्षोहपरित्यक्तविधौपुष्टेकर
भांहुं अंगुष्ठोहदयेनीधायचिपुक्तनासाग्रमा
नावयददेनवाविधिनासनायपसिनाप्रसासर्
प्रोच्यते ॥८३॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

वामनागुह्याकौअनमादक्षपार्श्वकापेतावाक्यनुदाहिनागानुर्द्धकाअनर
मावामपेतावाक्यनु ॥ स्वसिकासनहुं ॥८४॥

जानुवोरैरसम्पककृत्वापादततमे ॥ चतुर्काय
समासिनः स्वसिकृतुप्रवक्षते ॥८४॥

दाहिनागोत्रायुमचार्यदाहिनागोत्रकागोत्रिगाठस्यपार्श्वमाएषनु
वामगोत्रायुमचार्यवामगोत्रकागोत्रिगाठवामपार्श्वमाएषनु ॥ गोमुखासन
कहिंछआसारमयोगिलेकलाकोयोगवाकोप्रथम अंगआसनहुं ॥ कसे
लेकलाकोयोगासन १ वज्रासन १ मुक्तासन १ गुप्तासन १ विरासन १ कर्मासन
१ कर्कशासन १ उनागकर्मासन १ धनुरासन १ गोस्त्रासन १ जेनीनानाप्रका
रकाआसनहठप्रदिविकाविखेकलाकोटः ॥८५॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

स्यदसर्गगुह्येनुस्यपार्श्वेनियोजयेत् ॥ द
क्षिणोपितथासर्वगोमुखगोमुखयथा ॥८५॥

श्रीसप्तसमानदोशोआसनहेन कम्भकसमानप्राणायामहेननादसमा
नमाथिरहाकातये योगसदुलकेहियोगहेन ॥८६॥ * ॥८६॥ * ॥८६॥ * ॥

नासनसिद्धसदुलकेमकेवमोवम ॥ नखे
वारिसमासुदाननादसदुलोतये ॥८६॥

कहियाकाईवादिआसनअभासगर्भपरिधुमकोडीकननाडिभुक्तअभा
सगर्भमुक्ताअभासगर्भप्राणायामअभासगर्भ ॥८७॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

येवमासनवर्धस्थोमोगीद्वोविजिधम् ॥ अथा
भासेनादिभुक्तिमुक्तावादिपनकिवा ॥८७॥

वाकाकवाजप्राणायामनिर्नयकहिंछमनुष्यकासरिरआक्राअंगुष्ठा
तेहृदअंगुष्ठहुं ॥ भनिनानिजनलेकलाकोटः ॥ शरिरकोप्राणायामना
शिकारिघदेविवाकअंगुष्ठनीस्कंछ ॥ कसेकामतविखे १४ अंगुष्ठनिस्कंछ
सरीरभेदापनिअधिकप्राणायाममनियोगिहृकलेकलाकोटः ॥८८॥

अथेदंशरिरस्कीयागुलिभिपुष्टेयामपगुता
याममुक्त ॥ दिनेसांगुलिभिशरिरासमिरोधि
कंप्राणार्जामतोयोगवृद्धि ॥८८॥ * ॥ * ॥ * ॥

योसर्गविखेप्राणायामप्राणायामकोअभासगरिकनशरिरघटाईना
कदेविवाहिरननिस्कनुनाकसममात्रपुपावनुलोयोगवृद्धीततविखे
संपूर्णयोगीकामध्यविखेअष्टयोगीकहीछ ॥८९॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

ईहप्राणायामसदाभासतोयोनरोपुनभार्यनये
तेनमगात् ॥ समतोर्वशरिरेणवामुतवेस्मीन्
सुपुष्टोपुष्टेहर्तमोयोगविक्षु ॥८९॥ * ॥ * ॥ * ॥

नित्यभानगरीविभुतिधारणागरीभुचीभेकनयाप्रासनकुशासनकम
नासनईवादिपवित्रआसनमावसिकनमवनासगरिकनप्राणायाम
गरीकनगरापतिईहदेवागुरुकोपुनामस्कारगरीकनपुर्वमुखभयो
वाकंनरमुखभयोवाहेरिकनयोगाभासगर्भ ॥९०॥ * ॥९१॥ * ॥ * ॥ * ॥

नित्यभानेनसंयुक्तभुविर्भवासमाहित ॥
मवपुष्टवृद्धिरशीतनसधरसदा ॥९०॥
मुक्तासनोपरिकुसानसमासिर्वाथवागीर्ग ॥
विनायकसुसंपुष्टकृतमुक्तादिकादिभि ॥९१॥

चंद्रनादिनेपुरकचंद्रसूर्यदुवेनादिलेकम्भकसूर्यनादिलेरेचक्रयेकमसे
प्राणायामगर्भपुरककेरुगर्भकम्भक १६ हेरुगर्भरेचक्र ८ हेरुगर्भयोसा

काकचैव प्रतमाहर्तविपेत्प्राणसंयमनमेत
दुर्गतममृः ॥१००॥ × ॥ × ॥ × ॥

गोरक्षकामर्तनेयवचकृच्छ्र योमरारिविषेगुदस्थानदेविमायिर्विक्रस्थान
देवितनमुनीधारवक २ बुनुर्दतनीकोणसहित योवचमानीवस्वरूपिदि
वकास्थान गोरक्षनाथकामर्तनेयसत्रकोनकामध्येविषेमहाशिववि
क्रुपश्चिमादिसाहेरिवस्याकाछन इनेशिवकामसक्रुविषेमरारिह्लाको
छ योगाभ्यासनेयोमनिकादसंगुपाकन्याकनयोगीभंगुजुनमुनीधा
रकास्थानविषेकृगुदलिनिसक्ति पंचासतसर्वस्वरूपिनिसाक्षिविवन
भैसर्पाकारजलाभैवधुभयाकोछकनेकृगुदलिनिसक्तिदेविवायुकोट

पतिहर्षनेक राड निगिसकी देवि अमिको ५ पतिहर्ष ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥
 ५ नेक राड निगिसकी देवि विदुना दहस मनयति को ५ पतिहर्ष सोही ५
 राड निगिसकी कामरु विरस पुर्ण कामना दिकर रखा किह ॥ १० ॥
 ८११५॥ १०११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥

देहि सितान यप्रोक्त सिद्धिर्दम्पदेहिनाम् ॥ गुडमे
 र्णित एवस्थ मुना धारवी कोराकम् ॥ १॥ शिवस्य
 जिवरुपस्य स्थाने न द्विप्रकासके ॥ यवर्क राड निगि
 नाम परसकी पुतिहीना ॥ १॥ यन्मा दुपयने यथ
 --- प्रजायते ॥ तन्मा दुपयने विदुसमा दम्प प्रवर्त
 ने ॥ १॥ यन्मा दुपयने सो यन्मा दुपयने मन
 ॥ तदेव कामरु पारखी विरकाम फल प्रदम् ॥ १०॥
 ११०॥ ११०॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥

यो मुना धारक जगत्पुनर्गवर्ग विजुलिको जलो जने युक्त भया को वी को
 रा मा अजिवस्या का हनु नमजगत् राहा का शिव को दर्शन पाठ्या फल
 फेरि नमनिनु पदेन ॥ १११ ॥ ११११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥

तपुवामिक ए मासी नदि व दिवहि स्फुरे ॥ वि कोरा
 तपुनै फेर को मे धा मुनि हीनम् ॥ १११ ॥ ११ ॥ ११ ॥

यस्दे वि माथी स्वाधि स्थान दे विषात वक दम्प पारा निहू पक्षि महे रिरहा
 का हनु सो सद्को अर्थ ॥ ११२१ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥

स्वाधि स्थानो ह्ययवर्क निगि मुखे वडा रकम् ॥
 नामी दे मे स्थान वरु दसार मणि पुरकम् ॥ ११२ ॥

प्राणा वायु को आश्रय अर्धवर्द को जलो आकार हना मिस्थान विषे मनि पुरक वक
 दस दल हने को देवता स पुर्ण ले मणि वहा येर मणि पुर नाम भया ते स्दे वि माथी
 हृदये स्थान दे वि अना हत वक वा दस दल पुर्ण गि विर ना हा पस्या का देव
 देविक नन नाने जाल सन्निवा मा धम न गी कन र ह हनु कथ स्थान विषे
 विभु वक वा दस दल नाने धर विर यो देविको स्थान क हि ह ॥ ११३ ॥ ११३

वा दसार म हा चर्क हृदये ना हनो यथा ॥ तदेतत्
 पुर्ण गि वारखी चिठि व वरानने ॥ ११३ ॥ क र ठ र पे
 वी भुक्ता खी यो वरु को द शारक ॥ चिठि नाने धर
 नाम निखने वा ५ मने धर ॥ ११४ ॥ ११४ ॥ ११ ॥

माहादेवि माथी भूमध्ये विषे आशा चक दि दल वंदु मुने को स्थान मा
 विदु मुने को स्थान मा माहा रज यो स्थान को नाम ध्यान विर रुहा को ह

माहादेवि माथी सधु दल पन आधो मुख स रत का र्वे दना को जलो वरु क से का
 मत मा सी पुर्ण वरु वी कोरा वी दुवर मजी वे देवता गो रथ नाथ कामत मा ॥ ११५ ॥
 आशा नाम भूमे मे ध्वे की दनै वरु मुने म ॥ ११५ ॥
 माहा विरु ड प रिहा प्रमि प्रमि ॥ ११५ ॥ ११ ॥ ११ ॥

गोरक्ष नाथ कामत ने नाडी को ड म नि क ह ह ॥ वी क दे वि माथी ना मि दे वि त व
 थो रे वा म भा ग क क त अ ड ज लो ल स स्वा ई मो ती वो भ या को वि र्वा वि नि ना म
 भ या को ना दि स पु र्ण ना दि को ड प ति स्था न दे वि २००० ह न र ना दि र्प गि ह
 ॥ ११६ ॥ ११ ॥ ११ ॥

ईदमे का पथी स मे र्क व यो निख गो ड व ॥ त व ना ज स मु र्वा ना स क श्रा र्णा वी स
 प्रति ॥ ११६ ॥

वेज शास्त्र कामत विषे ५०००० ह न र ना दि य नि ना दि का म ध्वे द स ना दि मु र्वा ह
 प्राण क रा धार ना ग र्क सो रे द य का म त मा २४ ना दि मु र्वा ह ये स ना दि मा थि
 ग या का १० ना दि त ग या का २ ना दि द ही ना हा त मा ग या का २ ना दि वा म हा त
 मा ग या का २ ना डी ह न मु र्वा द स ना दि का म क ह ह ॥ ११७ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥

ते पुना रो स ह ये सु धि स प्रती र द ह र्ता ॥ प्राधा
 ना प्रा रा वा दि यो भु य ला मु द स स्म ता ॥ ११७ ॥

ईद पिग ला सु सु र्णा गा र्ग धा रि क जि जि ह्वा व पुष्पा य स ध्वी नी अ र्जु वा कु डु र्वा वि
 गी १० सु सु र्णा ना दि का मी व वी व ना दि ह्वा ॥ प वे दे व ता प व व र्ग मे क न र हा का ह
 र वि व ना दि का मी व व ल ना दि ह्वा क म त का रा का सु क म सु व प्र मा रा भै र हा
 का ह न सु सु र्णा ना दि को मार्ग ई द ल नु कानु को मि व मा र्ग मा ह रि व ल र प
 र्थे त पु गी र हा को ये ला ना दि व क को गी त न क ह ने वि वा र ग र्ग ई द ना दि को ह
 न वा ५ पा डि पी ग ना ना दि को स्थान वा दि ना प डी नि ग दे वि त व अ ड दे वि मु म
 ध्वे स म पु गी र हा को ह्वा ने व को स्थान गा र्ग धा रि वा दि ना ने व को स्थान क सि
 जि ह्वा वा दि ना ना लि का मा पुष्पा वा मा ना लि का मा य र्जु धी नि मु ख मा अ र्जु
 पुष्पा र्जु दे स मा कु डु यो नि स्थान मा र्जु वि नि य नि ना दि ह्वा प ति आ क रा
 क्रा क र्म ग र्ग र द स धा र मा व स्या का ह न ई द पि ग ला सु सु र्णा गा र्ग ये नि ना दि प्रा रा वा
 यु को मार्ग ई द व र्द ना दि पि ग ला सु र्वा ना दि सु सु र्णा अ र्जी ना दि द स ना दि
 विषे द ल वा यु व स्या का ह न प्रा रा वा यु १ अ पा रा वा यु २ स मा न वा यु ३ पा रा
 यु ४ ना ग वा यु ५ क र्म वा यु ६ क र्म ना वा यु ७ दे व द न वा यु ८ ध र्म न ये वा यु ९ ई द ना
 वा यु १० ये नि वा यु ना दि ह्वा का मि व व वि र हा का ह न ॥ ११८ ॥ ११८ ॥ ११ ॥

ईदं पितायेव सुप्रमाणं चरित्यका ॥ गंधार-
हस्तिनिजिह्वा वपुश्चा वयसंधीणी ॥ १७८ ॥ अत
पुष्पाकुटुंबेव सीखिनिदसमिस्मृता ॥ १७९ ॥ ५ ॥
दसवायुमध्येर्षववायुमुख्यं चैव वायुमध्ये प्राणवायु अवातवायु
ईदं ईदं मुखे ईदं ईदं मध्ये प्राणवायु कुंभसंयो वायुविवेजि वर्मनो गित
कर्मविवे प्राणाया मगरी कनः कनः भवर्ग मगका वापुः कनः कनः
नाशागर्भ ॥ २०१ ॥ २१ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥
येते सुवायवर्षव मुख्या प्राणादये स्मृता ॥ गी
मुख्यतमावेतो प्राणाया मोनरो मे ॥ २०१ ॥
प्राणायामो मध्ये मुख्या प्राणा मूर्ता सदा
॥ २११ ॥ ५ ॥
प्राणवायुमाथी गैरहाका छन्दनासिका मावो नैरुं छन्द अवातवायुतवो गिर
गईरहाका छन्द मवमुनिका सिरुं छन्द वातवायुदाकिना कर्तुं गईरुं छन्द
शरिरसंपूर्णमावस्याका छन्द कर्तुं दानवा कर्तुं स्थानविवेवस्याका छन्द कर्तुं ग
मरा छन्द कर्तुं कर्मकनग कर्तुं धकधक गरीरुं छन्द समानशरिर मध्येवस्या
कोछन वायापियाको अननजसंपूर्ण शरीर सवे स्थानमावरो परा
रिच्छः ॥ २२१ ॥ २३ ॥
प्राणो नाम प्रणामरावात् नासाग्रस्था
नवतिनि ॥ अवाणो नाम अधोगमनवात्
पाद्मादिस्थान नवतिनानो नाम विश्वग
गमरावात् अखिलस्थावती कर्तुं दानकर्तुं
स्थानियदुक्कगमनवात् कर्तुं मरा वायुसमा
नसरिरमध्ये स्थः शितपीता वपानादिशामि
कराकरः ॥ २२१ ॥ २३ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥
नागवायुनेव सनगरा कर्तुं कर्मवायुने आधाननिकला छन्द धामुं रगर
कर्तुं कर्मवायुने भोगनगरा कर्तुं देवदत्तवायुने नृमा अर्किया
गरा कर्तुं धर्मनये वायुने वायाको पुष्पगरा कर्तुं ॥ २४ ॥
नागकर्तुं रगरा कर्तुं कर्मकर्तुं मोननकर कर्तुं कर्तुं
करः ॥ देवदत्तो मरा कर्तुं धर्मनये वीधनकर
॥ २४ ॥ ५ ॥

येसरिरविवेजसंवायुमवापनितथाविशेषमुख्ये वायुच्छा प्राण
वायु १ अवाणवायु २ ईदं ईदं ॥ २५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥
असंवायुकोदेहे सीनियत्र पूरुहा ॥
तथाविशेषकर्तारे प्राणा वानो आगुभो ॥ २५ ॥
निधारदेविपनी नासिकादेविमाथी मुखे मापरा वायुको स्थानकर्तुं
छन्दये मध्ये विवेपनि प्राणा वायुको स्थानकर्तुं छन्दये नाभिविवे
पनि प्राणा वायुको स्थान कर्तुं मगविवे गोडाका पुदी अगुठा विवेप्रा
णाको स्थानकर्तुं हाको छ ॥ २६ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥
अस्य नासिकयोर्मध्ये नाभिमध्ये ॥ प्राण
तय मिति प्राकः पादी गच्छे च केवन ॥ २६ ॥
अवाणवायुको स्थान मगवार मुखवार गच्छानु कोहि आवाय्य काममा
कच्छाको छ ॥ २७ ॥ अवातनिगय के बिदुदमे मेरु मनुष्यः ॥ २७ ॥
धोरुजागुसु ॥ २७ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥
यस सरिरविवेदस्य कारको हाडरहाको छ मुखर्वसविवे १ वाड २
विवेक ३ विवेये निरुठ योगजां न्याने विचारानुपद ॥ २८ ॥ ५ ॥
मुखर्वशेन गच्छि कर्तुं धर्म वीधुं कथा ॥ नासा
विसरुं वाड पाद कर्तुं च जानुनि ॥ २८ ॥
येसरिरु विवेदस्य कारका अग्रीरहाका छन आजक अग्नि रैनक अग्नि
क्षेत्रक अग्नि पावक अग्नि रेवक अग्नि दाहक अग्नि शोषक अग्नि पोष
क अग्नि र्वधक अग्नि अति अग्नि येती सवज्जा छपेट विवेसुर्वे कामा
मावस्याका छन देहविवे मया को दशा वायुदसनादि दसकर दस अग्नि
प्रेतिको विरोधनवारि विचारगरी कनयोगा कासगर्भ ॥ २९ ॥ २० ॥
आनको रैनक श्वैव वातक श्वैव कलथा ॥
वाचको रेवको श्वैव दाहक शोषको छ ॥
२९ ॥ कोषको र्वधक श्वैव तीदेहे सीनियत्र पूरुहा ॥ २९ ॥
माहोर्त प्रातदस आधारको विचारकर्तुं छु पेता नामाथी १ पेता नामा २ मज्जा
२ अर्गुकोष नामा ५ ददये ईदं छु जीह्वा माथी ८ जीह्वा मज्जा
सीका १० कला ११ ननात् १२ आधि १३ येती बोदसाधार स्थानविषे
वायुको रमको शोयोगने पादी गच्छ विवेदेवताको तेजमय ध्यानगर्भ
होरुं छ ॥ २९ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥
अथने बोदसाधारान् कथनामिविवेखतः ॥ नेजो
ध्यानवादां गच्छे कर्तुं दृष्टी स्थिरा भवदी वादयः ॥ ३० ॥

कालकाचप्रमाजसो सवेतवर्गकसेकाममा सुवर्गनादायैदुकास्थानहैवीज
ईक्षुमायदेवताअवैतिकापुरिखोलाकिनयोगीनीयस्थानविषेमनलाईकन
अनेकदेवताहृपनिदसनपाईछ ईक्षुमायदेवतादिपुत्रादिबिमाधिपुत्राकाछे
नरः अद्वैतकमारहाकाअक्षरमेअतरमाहकाईछ ॥१४४॥ × ॥ × ॥ × ॥

सहस्रारपञ्चविसर्गदधोलादधोचक्रमारककिं
नरः पुनी ॥ फरेनेनहीनस्त्रिभुवसादनेः स्फुरः प्रसि
नालेमुधासु समाजे ॥१४४॥ × ॥ × ॥ × ॥ × ॥

विसर्गस्थानदेखितजअधोचक्र सहस्रद्वयपनछतस्मान्नीकनैक अपतकीनिय
नरः बंदुमाछरविकोलाविदुछनपरमविदुः शिवदेवतावागपतीपुरिहो ओं विजत
स्त्रिकोलासाहादाकीनीतिनवसाकाछनमानसकीईछासकीआपुसकीसिहि
नगुरुकोस्थानप्रकृतिसरूपछ ॥१४५॥ × ॥ × ॥ × ॥ × ॥

तदतर्गतवलरंधुसुसुक्ष्मयदाधारभूतिसुसुक्ष्माव्य
नाथा ॥ तदेतपठदियमपनगुह्यसुरैरप्यगम्यसु
मेप्यप्रयेतान् ॥१४५॥ × ॥ × ॥ × ॥ × ॥

योसहस्रद्वयकमलकाभीवअतिमुश्चर्चलरं द्रव्योब्रह्मरंधुसुसुक्ष्मादीकोआ
धारछयोस्थानअतिगोप्यछ देवताहृताईपनिदुलभछ ॥१४६॥ × ॥ × ॥

स्ततैकैवासर्षीपरमकृतपठविदुहृपिस्वरूपि-य
नाजेदेवदेविभवभयोतिमरुधैसहसोमहेशो ॥
मुगभासादिभुगोरसविरससिगासर्पनांमेतरने
सोधीकारिविमुचनभिमनफुलदोयोगिनीयोगी
गम्ये ॥१४६॥ × ॥ × ॥ × ॥ × ॥ × ॥

योस्थानकानामकैलाशपरासकोस्थान यस्थानविषेविदुहृपभैकनमदाशि
परिवारमानछरुसैमारकोभयनासगर्भीविषेअहंकारनाशगर्भीसुखे
हेविभुभयाकोछसैपुर्णपृथ्वीकोआदिस्वरूपधुक्तवर्णअमृतकारकन
कोडदाछदावभुभयाकोछभक्तहृकाचिनायाकोअभिमनफुलकनपुरा
गर्भीयोगिहृकापनियोगधारणानेगम्यभयाकायासासदाशिवरहनभ
मीकोछ ॥१४७॥ × ॥ × ॥ × ॥ × ॥ × ॥

स्थानस्यास्यज्ञानमावेगहृणसारेस्मीसुखीने
वभयः ॥ भुतयामसैतताभ्यासयोगाकर्तुंहर्तुं
स्याच्चसातिसमया ॥१४७॥ × ॥ × ॥ × ॥ × ॥

यस्थानकोज्ञानवाहीकनमनुष्यहृकाससारमाफेरिभुनभनपदेनने
रिगरसर्वदायोगाभ्यासनेयोसैमारभुष्टिगुनशक्तिसामर्थ्यईछ ॥१४८॥

स्थानापदेहसनिवासभुगेकैलाशनामनेहनि
धायतेव ॥ योगिगणवाधिरैधकनाधिधिनाधि
शिरनिवतिमुमुक्षु ॥१४८॥ × ॥ × ॥ × ॥

योकैलाशस्थानविषेयोगीहृकनैविनदुहृगरिहृताईकनसंपुर्णरोगनाच
गरिअकावमुमुक्षुनितिचिरकानिबमुक्तहृल ॥१४८॥ × ॥ × ॥

आधारेकनकप्रभप्रविजलदीपाकतिअमृतस्थान
नूननभान्कागिलदसनाभोहृदमोहहो ॥ दीपाकारमु
रोनरेस्वरकरोयोतप्रभभावभैकरुहदिवसीवार्तिमणि
गरोयोतशुबोर्नरे ॥१४८॥ × ॥ × ॥ × ॥ × ॥

1007 1/2

